

श्रद्धेय पद्म विभूषण पंडित छन्नू लाल मिश्रा जी लोक और शास्त्र दोनों के विद्वान थे उन्हें भारत की शास्त्रीय संगीत में प्रकांड पांडित्य के रूप में जाना जाता था मुझे याद है एक बात उनकी जो अभी तक मैं नहीं भूलता हूं, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ राजनांदगांव में खैरागढ़ महोत्सव विश्वविद्यालय की ओर से मनाया जा रहा था और उस में बनारस से शास्त्रीय संगीत के लिए श्रद्धेय छन्नू लाल जी और लोक संगीत के लिए मुझे आमंत्रित किया गया था, मेरा कार्यक्रम पहले था और उनका कार्यक्रम मेरे ठीक बाद में था, कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा शाबाश बेटा काशी क लाज बचा लेहला! कहो जिभो पकड़ के गा देहला, सब हक्का बक्का रह गयीलन, ईहै बनारस ,हे मन्नू इस

मत जाना कि हम शास्त्रीय संगीत जानिला, हम बिरहा भी गवले हयी हीरालाल के साथ,, बड़ी साफगोई से मुझे बताये। लोक और शास्त्र के अप्रतिम हस्ताक्षर थे गुरु जी। एक वाकिया और बड़ा रोमांचित करने वाला था, गंगा महोत्सव 2009 में महोत्सव के बतौर अध्यक्ष उनका मार्ग दर्शन अति प्रभाव कारी सिद्ध हुआ मुख्य मंच पर मात्र तीन प्रस्तुतियां होने वाली थी प्रथम श्रद्धेय पद्मश्री हीरालाल जी की दूसरी प्रस्तुति मेरी और तीसरी प्रस्तुति उड़ीसा की गोटी पुआ नृत्य की, बाकी गुरु जी के लगभग 15-20 शिष्यों की छोटी-छोटी प्रस्तुतियां थी उन्होंने अध्यक्ष की संबोधन में बताया कि यह गंगा महोत्सव का मंच है और यहां कचौड़ी गली जैसे गीतों का गायन नहीं होना चाहिए तब उनका मुझे परिचय नहीं था हां वह हीरालाल जी को जानते थे उन्हें संसय था की ये बिरहा के लोग हैं कुछ इधर-उधर का लटका झटका ना जोड़ दें, उन्होंने अपने संस्कृति को बचाने के लिए एक नेक सलाह देने का प्रयास किया था। हीरा बाबूजी ने कहा कि मन्नू आप ही शुरू करो, मुझे गुरु जी की बातें अक्षर से याद थी जब मैं बिरहा के लोक छंदों की प्रस्तुतियां शुरू किया और यह गुस्ताखी करते हुए बताया कि गुरु जी यह बिरहा है इसमें कलाधर छंद, रशना गहन छंद, वर्ण शोक, अधर छंद, जंजीरा, सुनाया और यह ज्ञात कराते रहा की आदरणीय गुरु जी का सुझाव अति उत्तम था, तालियां बजती रही और गुरु जी का पुनर्वलन मेरी जिन्दगी का टर्निंग प्वाइंट बना, तब से पंडित जी मुझे बहुत प्यार दिया करते थे, और उन्होंने उस दिन जो अथाह प्यार दिया वह कभी नहीं भूलाया जा सकता। उन दिनों हिंदुस्तान की रिपोर्टिंग करने पहुंचे वर्तमान में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य बड़े भ्राता आदरणीय धर्मेन्द्र सिंह जी ने एक खूबसूरत रिपोर्टिंग की और सच में गुरु जी की वाणी सही हुई और बिरहा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंगा महोत्सव के माध्यम से सुनने और देखने वाले लोगों को आश्चर्यचकित किया। भारतीय संस्कृति के लोक धुनों पर गुरु जी की पैनी नज़र रहती थी, और हर एक कलाकार को बेहद संजीदगी से सलाह देते थे। शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत के सेतु पुरुष के रूप में जाने जाते रहें हैं लोक धुनों को शास्त्रीयता के भाव में पिरोने वाले शिखर पुरुष के रूप में विद्यमान थे।

मैं अपने पूरे बिरहा समाज की ओर से अपनी राष्ट्रीय बिरहा अकादमी की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि प्रेषित करता हूं!